ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 345-349

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

समकालीन संदर्भ में अम्बेडकर के राष्ट्रवादी विचारों का महत्व

डॉ0 सानन्द कुमार सिंह Email : sanandksingh@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष न केवल विदेशी शासन से राजनीतिक सत्ता छीनने का संघर्ष था, बल्कि समाज को पुरानी सामाजिक संस्थाओं, प्रथाओं, विश्वासों और दृष्टिकोणों से शुद्ध करके आधुनिक भारत की नींव रखने का संघर्ष भी था। अम्बेडकर ने राष्ट्र–निर्माण को आंतरिक संघर्ष का हिस्सा माना, जिसकी स्थापना के लिए बाहरी और आंतरिक उत्पीड़न और दासता दोनों से स्वतंत्रता प्राप्त करना बहुत ही महत्वपूर्ण है ।अम्बेडकर के द्वारा मुख्यधारा के राष्ट्रवाद के विरोध के बिना, भारतीय राष्ट्रवाद के सामाजिक आधार को मजबूत और व्यापक करने के लिए राष्ट्र के आंतरिक सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को पर्याप्त रूप से नहीं किया जा सकता था। इस शोध पत्र में हम राष्ट्रवाद पर अंबेडकर के विचारों का अध्ययन करेंगे जिनके लिए लोकतंत्र या स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से ही नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता से भी था।। अंबेडकर के विचारों में राष्ट्र, राष्ट्रवाद ,राष्ट्रीयता व देशभक्ति के बीच अंतर को देख सकते हैं***

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता ,धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र व संविधान।

एएसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, सतीश चन्द्र कालेज, बलिया (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

राष्ट्रवाद के विभिन्न अर्थ तथा परिभाषाएं हैं अगर हम राष्ट्रवाद के अध्ययन के उपागम को देखें तो उसके राष्ट्रवादी ,मार्क्सवादी, ,कैंब्रिज तथा संस्कृतिक उपागम के अनुसार राष्ट्रवाद के विभिन्न अर्थ है। परंतु यहां हम अंबेडकर के राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन करेंगे उनके विचारों में राष्ट्रीयता, राष्ट्र ,राष्ट्रवाद तथा देश भक्ति के बीच एक अंतर देखने को मिलता हैं।

अंबेडकर के राष्ट्र, राष्ट्रीयता व राष्ट्रवाद पर विचार अंबेडकर द्वारा अपने विचारों में राष्ट्र, राष्ट्रीय, राष्ट्रवाद के बीच के अंतर को स्पष्ट किया गया है अंबेडकर के राष्ट्रवाद के संपूर्ण विचारों को समझने के लिए इन सभी शब्दों के अर्थ को समझना आवश्यक है।'' राष्ट्रीयता लोगों को एक साथ जोड़ने की मनोवैज्ञानिक अनुभूति है यह संबंधी के प्रति मैत्री भाव तथा असंबंधी के प्रति द्वेष की भावना जागृत करती है।'' "राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रवाद में अंतर है राष्ट्रवाद के लिए राष्ट्रीयता का होना आवश्यक है परंतु कई बार राष्ट्रीयता की भावना होने पर भी राष्ट्रवाद अनुपस्थित हो सकता है राष्ट्रीयता से राष्ट्रवाद के लिए दो शर्त है पहली एक राष्ट्र के रूप में रहने की इच्छा का जागृत होना ,दूसरा एक क्षेत्र का होना जिसे राष्ट्रवाद अधिकृत एक राज्य तथा राष्ट्र का सांस्कृतिक घर बना सके। परंतु इस क्षेत्र के अभाव में क्या होगा लोड एक्टर की यह उक्ति स्पष्ट करती है "आत्मा एक ऐसे शरीर की खोज मे भटकती है जिसमें वह पूर्ण जीवन का संचार कर परंतु उसे ना पाने पर वह मर जाती है"।

राष्ट्रीयता मनोवृति है जो लोगों को एक साथ देखती है जिसके लिए समान जाति, धर्म व भाषा आवश्यक शर्त नहीं है बल्कि एक भावना जो सभी को जोड़ती है जब वह स्वयं को एक राष्ट्र के रूप में देखते हैं तब राष्ट्रवाद की भावना आती है जो राष्ट्र के प्रति प्रेम के लिए है ब्रिटिशो से स्वतंत्रता प्राप्त कर हमें इस राष्ट्र की स्थापना करनी है जिसने राष्ट्रवाद की भावना से विभिन्न व्यक्तियों को इसे बांधा था। राष्ट्रीयता से राष्ट्र निर्माण के लिए सामान्य हित व भाईचारे का होना जरूरी है परंतु क्या जाति विभाजित समाज में यह संभव है? जहां ना जाने कितनी जातियां ,धार्मिक या भाषाई राष्ट्रीयता हो सकती हैं। यह तब ही संभव है जब इन विभिन्नताओ को छोड़ स्वयं को भारतीय के रूप में देखें और यह कार्य अंबेडकर को ब्रिटिशो से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने से भी अधिक कठिन लगता था, क्योंकि इस भारतीयता की भावना को जागृत करना व स्वतंत्रता प्राप्त करना ही अंतिम लक्ष्य नहीं है बल्कि इस भावना को हमेशा बनाए रखने के लिए एक राष्ट्र का निर्माण भी करना है जहां राष्ट्रीय भावना हमेशा उपस्थित रहे। अंबेडकर कहते हैं" मैं चाहता हूं कि समस्त लोग पहले भारतीय हो और अंततः भारतीय हो तथा भारतीय के सिवाय और कुछ भी ना हो।"

राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद व मानवता – अंबेडकर के अनुसार "भारत में देशभक्त वह माना जाता है जो अपने बंधुओं के साथ आमानवीय व्यवहार होता देख ,आमानवीय परंपरा के विरोध में ना आए ।मुझे खुशी है कि मैं देशभक्तों के उस वर्ग का नहीं हूं मेरे लक्ष्य लोकतंत्र व न्याय प्रदान करना है" अलॉयसियस ने भी अपनी पुस्तक में अंबेडकर द्वारा देशभक्ति व राष्ट्रवाद के अंतर को स्पष्ट किया है "देश भक्ति पित् भूमि से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

लगाव व पारंपरिक धारणा है वही राष्ट्रवाद राष्ट्र की विचारधारा व आधुनिक धारणा है'' इसी कारण अंबेडकर ने कांग्रेसी व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का समर्थन नहीं किया क्योंकि यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित थी हैं गेल ओमवेट कहते हैं "अंबेडकर के लिए राष्ट्रवाद केवल सामान्य रूप में राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना ही नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण ,सामाजिक एकता तथा सामाजिक एकजुटता का निर्माण समाज में करना था।

अंबेडकर के अनुसार यदि भारत में राष्ट्रीयता की भावना जागृत नहीं हुई है तो उसका कारण ग्राम व्यवस्था, जाति प्रथा व ब्राह्मण वाद है क्योंकि यह लोगों को बीच विभाजन कर देते हैं निजी हित महत्वपूर्ण हो जाते हैं जिससे राष्ट्रीय भावना उत्पन्न नहीं हो पाती है अंबेडकर जाति को राष्ट्रीय विरोधी के रूप में देखते हैं क्योंकि यह समाज को विभिन्न जातियों में बांट देती है। अंबेडकर के अनुसार "राष्ट्रीयता का आधार धर्म की समानता नहीं है सामाजिक एकरूपता के लिए धार्मिक एकरूपता जरूरी नहीं है"।

राष्ट्र– राष्ट्र एक तरह की चेतना है। उनका कहना था कि हिंदुओं में सामूहिक चेतना की कमी व जातिगत चेतना है यही कारण है कि यह राष्ट्र नहीं बन सकता हैं । एकता धर्म, जाति व भाषा से नहीं बल्कि चेतना से निर्मित होती है जाति प्रथा सामूहिक क्रियाकलाप पर रोक लगाती है। सामाजिक एकता के बिना राजनीतिक एकता प्राप्त करना कठिन है ।राजनीतिक एकता होने से भारत एक रियासत तो बन जाएगा परंतु एक रियासत एक राष्ट्र नहीं होता इस प्रकार एक मिश्रित और मिलीजुली रियासत को खतरा बाहरी हमले से इतना नहीं होता जितना कि राष्ट्रो की इच्छा विरुद्ध जकड़ कर और दबाकर बनाई गई राष्ट्रीयता के उभरने से होता है। अंबेडकर द्वारा जिस आदर्श राष्ट्र की कल्पना की वह स्वतंत्रता ,समता और भ्रातृत्व की धारणा पर आधारित था और यह एक लोकतांत्रिक राष्ट्र होगा जिसके लिए दो शर्त है पहली अपने साथियों के प्रति समानता व आदर की भाव की मनोवृति, दूसरी एक सामाजिक संगठन जो सामाजिक बंधनों से मुक्त हो। अंबेडकर के अनुसार राष्ट्र के लिए वस्तुपरक सामान्यता जैसे जाति, भाषा व धर्म इत्यादि नहीं बल्कि आत्मपरक एकता महत्वपूर्ण है।

अम्बेडकर भारत में सामाजिक अलगाव की चुनौती से चिंतित थे, इसलिए उन्होंने कहा, "अगर हम एक लोकतंत्र का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं को पहचानना होगा क्योंकि संविधान का भव्य महल लोकतंत्र में लोगों की निष्ठा की नींव पर खड़ा है। ये विचार उनकी राष्ट्रवाद की भावना को दर्शाते हैं, जिसमें व्यक्तियों के बीच कोई भेद नहीं है, चाहे उनकी जाति और धर्म कुछ भी हो। हम सभी के बीच सद्भाव है। इसलिए हमारा राष्ट्र अनेकता में एकता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसीलिए संविधान की प्रस्तावना नागरिकों के बीच समानता और बंधुत्व पर जोर देती है। कोई भी राष्ट्र उसकी परंपराओं, संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के एक साथ आने से बनता है। इसलिए राष्ट्रवाद में संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है। अंबेडकर के अनुसार हम राष्ट्र की स्वतंत्रता और मानवता की स्वतंत्रता को अलग अलग नहीं कर सकते ,जनता की स्वतंत्रता की कीमत पर हम राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते एक स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण तभी हो सकता है जब उसके अंतर्गत रहने वाले सभी व्यक्ति बाहरी व आंतरिक सभी तरह की उत्पीड़न और बाधाओं से स्वतंत्र हो ।

अंबेडकर के राष्ट्र की अवधारणा को हम भारतीय संविधान की प्रस्तावना में देख सकते हैं "

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न, समाजवादी ,पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित कराने वाली, बन्धुता बढ़ाने के लिए, दृढ़ संकल्पित होकर अपनी संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ईस्वी इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं जो भी क्रिया व कार्य इन आदर्शों के विरोध है यह न केवल संविधान विरोधी , बल्कि लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा राष्ट्रीय विरोधी भी है ।अंबेडकर ने राष्ट्र की गरिमा व व्यक्ति की गरिमा दोनों को महत्व दिया है ।स्वतंत्रता ,समानता और बंधुत्व उनके आदर्श रहे हैं। एक राष्ट्र के लिए स्थानीय राष्ट्रीयता को दबाना नहीं बल्कि उनका समाधान करना आवश्यक है क्योंकि राष्ट्रीयता को दबाना राष्ट्र के लिए खतरा हो सकती है।

राष्ट्रीय व राष्ट्रीय विरोधी की समकालीन अवधारणा यदि देखा जाए तो स्वतंत्रता के 74वर्षों बाद भी राष्ट्रवाद व राष्ट्र विरोधी की परिभाषा में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया है राष्ट्रवादी के दो आधार हैं पहला देश भक्ति, देश व संस्कृति से अत्यधिक प्रेम ,दूसरा आंतरिक समस्या, शोषणा, समानता जैसे जाति प्रथा, जाति व धार्मिक हिंसा पर शांत रहना यदि आप इसका उल्टा करते हैं अर्थात आप में देशभक्ति की कमी व अन्य समस्याओं पर आवाज उठाते हैं तो आप राष्ट्रीय विरोधी की श्रेणी में आ जाते हैं बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह द्वारा राहुल गांधी को राष्ट्र विरोधी कहा क्योंकि वह JNU विद्यार्थियों के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

साथ खड़े थे! संघ परिवार के अनुसार राष्ट्रीय विरोधी की सूची इस प्रकार है आदिवासी, दलित विद्यार्थी, लेफ्ट बौद्धिक वर्ग, सामाजिक व मानव अधिकार कार्यकर्ता, कुछ धार्मिक अल्पसंख्यक, परमाणु क्रिया विरोधी, सूअर व गौ मांस खाने वाले, पाकिस्तान गैर घृणा वाले , अंतर धार्मिक जोड़े ,समलैंगिक संबंध , इसके साथ ही पत्रकार भी अब इस श्रेणी में आ गए हैं।

राष्ट्रीय व राष्ट्र विरोधी की परिभाषा मुख्य धारा द्वारा परिभाषित होती है उसके आधार वही है बस पार्टी बदलने पर श्रेणी में हेरफेर होता रहता है। नेहरू द्वारा राज्य में समाजवादी पार्टी व भाषी राज्यों की मांग को राष्ट्र विरोधी कहा ,कांग्रेस के सिंडिकेट नेता व जनता दल द्वारा इंदिरा गांधी को राष्ट्रीय विरोधी कहा, इंदिरा ने विपक्ष को कहा । इंदिरा गांधी को सिख द्वारा गोली मारने व सिख दंगों में सिखों को राष्ट्रीय विरोधी कहां।बीजेपी ने मुसलमानों पर राष्ट्र विरोधी का चिन्हा लगा दिया।

1930 और 40 के दशक में स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं के विरोध के कारण अम्बेडकर को राष्ट्र–विरोधी के रूप में देखा जा सकता है और उस धर्म को अस्वीकार करने के कारण जिसे आज आधिकारिक तौर पर भारतीय जीवन शैली के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जैसा कि नए कानून ("बीफ बैन" से संबंधित) सुझाव देते हैं। लेकिन उन्होंने उच्च मूल्यों के नाम पर राष्ट्रवाद के इन ब्रांडों को त्याग दिया, यह तर्क देते हुए कि राष्ट्रवादी नेता भी दमनकारी हो सकते हैं और दुनिया को दिखा सकते हैं कि मानव गरिमा किसी भी चीज से अधिक मायने रखती है – जिसमें एक उचित राष्ट्र का निर्माण भी शामिल है।

राष्ट्रवाद की मुख्यधारा द्वारा की गई परिभाषा के अनुसार अंबेडकर को भी राष्ट्र विरोधी की श्रेणी में रखा जाता है इसके कई कारण है – कांग्रेस व गांधी के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल न होना, हिंदूवादी व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विरोध, सामाजिक स्वतंत्रता और समानता को राजनीतिक स्वतंत्रता पर प्राथमिकता देना ,पाकिस्तान व विभाजन की मांग को आत्म निर्णय के आधार पर उचित कहना, भारत एक राष्ट्र नहीं है यह कहना, हिंदूवादी धर्म व जाति का विरोध करना, दलितों की स्थिति में सुधार के लिए ब्रिटिश सरकार के प्रावधानों का समर्थन करना तथा देशभक्ति व राष्ट्रवाद में अंतर करना। अलॉयसियस के अनुसार अंबेडकर का राष्ट्रीय सिद्धांत आलोचनात्मक सिद्धांत है ,यह क्या है? का सकारात्मक वर्णन नहीं है बल्कि समकालीन अवधारणा की आलोचना, आत्म राष्ट्रवाद व व्यवहार का पुनर्निर्माण लोकतंत्र व उदारवादी आधार पर करना है। वोट बैंक की राजनीति में अंबेडकर के विचारों का भी पूर्ण इस्तेमाल किया जा रहा है कभी उन्हें राष्ट्रीय विरोधी तो कभी राष्ट्रीय वादी की श्रेणी में परिभाषित किया जाता रहा है कभी इन्हें हिंदू राष्ट्र विरोधी कहा जाता है तो कभी उनकी तुलना डॉक्टर हेड गोवर से की जाती है।

कथाकथित राष्ट्रीय विरोधी घटनाए– कुछ वर्षों में हम मीडिया व अपने आसपास किसी क्रिया को राष्ट्रीय विरोधी कहने की कई घटनाओं को देख सकते हैं कथाकथित राष्ट्रवाद के विरोध कुछ कहने का परिणाम दो हो सकते है आपको राष्ट्र विरोधी की सूची में शामिल करना या आप की हत्या कर देना कुछ विश्वविद्यालयों पर तो राष्ट्र विरोधी होने का लेबल लगा दिया गया है युवा वर्ग द्वारा अपने तार्किक विचारों को रखना तथा राष्ट्र या सरकार के विरुद्ध कुछ कहना या उनकी नीति या विचारों की आलोचना करना भी आपको राष्ट्र विरोधी की श्रेणी में ला सकता है इस तरह की कई घटनाओं को समाचारों या अपने आसपास भी देख सकते हैं। जवाहरलाल नेहरू केंद्रीय विश्वविद्यालय पर तो राष्ट्र विरोधी का लेबल लगा दिया गया है। वही मानवाधिकार कार्यकर्ताओं जो कैदियों ,आतंकवादी या नक्सलियों के अधिकारों की बात करते हैं उन्हें भी राष्ट्र विरोधी ही समझा जाता। वहीं अंतरजातीय व धार्मिक संबंध व समलैंगिक संबंधो को भी राष्ट्रीय संस्कृति के विरुद्ध समझा जाता है।

कुछ बयानों पर नजर डालते हैं दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ अध्यापक कहती हैं " बहुमत निर्णय लेता है कि हमारे देश के लिए क्या सही है और क्या गलत वह उनके लिए खतरा है जिनके मत भिन्न है "। वही स्नेहा जो एबीवीपी की सदस्य व रामजस घटना में भी शामिल थी कहती हैं "जो भी भारतीय परंपरा को तोडता है जो कि देश का आधार है वह राष्ट्र विरोधी है हमारा संघर्ष राष्ट्र के लिए है तथा उसके विरोध तो इसको तोड़ना चाहते हैं"। राष्ट्रीय विरोधी की यह परिभाषा अंबेडकर के विचारों तथा संविधान दोनों के ही विरुद्ध है जो केवल बहुमत व हिंदूवादी पार्टी के अनुरूप है। स्वतंत्र विचार रखना , सरकार पर प्रश्न करना व अन्याय के विरुद्ध लड़ना राष्ट्र विरोधी नहीं है बल्कि एक लोकतांत्रिक राष्ट्र की विशेषता हैं।

अंबेडकर के अनुसार राष्ट्र विरोधी की परिभाषा– अंबेडकर के लिए राष्ट्रवाद का अर्थ लोगों की आंतरिक एकता की अभिव्यक्ति तथा सामाजिक एकजुटता की प्रक्रिया भी है इसके लिए सर्वप्रथम हमें जातिवाद ,भाषा व धर्म इत्यादि विभिन्नताओ के विरुद्ध एकजुट होना होगा क्योंकि यह व्यक्तियों को छोटी–छोटी सामाजिक इकाइयों में विभाजित करते हैं जो राष्ट्रीयता व भाईचारे की भावना को नष्ट कर देती है। अंबेडकर का संघर्ष केवल राजनीतिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि सामाजिक स्वतंत्रता के लिए भी है।, रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन कर राष्ट्र का निर्माण करना जो सभी के हितों का प्रतिनिधित्व करता हो, क्योंकि समाज के हर वर्ग ने इसके लिए संघर्ष किया है परंतु दुर्भाग्य की बात है कि स्वतंत्रता के 74 वर्ष पूर्ण होने पर भी हम उस राष्ट्र का निर्माण नहीं कर पाए हैं जिसका सपना अंबेडकर द्वारा देखा गया था, यह केवल संविधान के प्रावधानों तक ही सीमित रहा है जिस तरह अंबेडकर उस समय राष्ट्र निर्माण के लिए संघर्ष कर रहे थे हमें भी वर्तमान में उसे व्यवहार में लाने के लिए राष्ट्र विरोधी अवधारणाओं का विरोध कर स्वतंत्रता ,समानता और बंधुत्व पर आधारित राष्ट्र का निर्माण करने का संकल्प लेना होगा। अंबेडकर ने संविधान सभा में कहा जाति राष्ट्र विरोधी है क्योंकि यह सामाजिक जीवन का बंटवारा करती है तथा जातियों के बीच घृणा का निर्माण करती है। दलितो पर दिन प्रतिदिन हत्या अत्याचार व शोषण की घटनाएं संविधान के प्रावधानों पर एक प्रश्न चिन्ह लगा देती है। जहां एक ओर हम हिंदू राष्ट्र की बात कर रहे हैं वहीं कई दलित हिंदू धर्म छोड़ बौद्ध धर्म अपना रहे हैं इसके पीछे का कारण स्वेच्छा है यह मजबूरी ? दलित छात्र रोहित वेमुला जो जाति शोषण के कारण आत्महत्या कर लेता है ।स्वतंत्र देश में इसके साथ किए गए इस तरह के व्यवहार के बाद क्या हम इसे राष्ट्रप्रेम की आशा कर सकते हैं?

अंबेडकर ने स्पष्ट रूप में कहां धर्म राष्ट्रीयता का आधार नहीं हो सकता। परंतु समकालीन सांप्रदायिक घटनाएं कुछ और ही दर्शाती हैं। अल्पसंख्यक समुदाय को राष्ट्रीय विरोधी की श्रेणी में रखा जाता है। गौ हत्या के पिछले 4 सालों में 134 मामले आए जिसमें शिकार लोगों में 50% मुस्लिम थे। 2015 में दादरी में 52 साल के अखलाक को भी वीफ खाने के शक में ईंट व डंडों से मार डाला । ना जाने कितने ही लोग इस सांप्रदायिक हिंसा का शिकार हो चुके हैं।

अंबेडकर ने हमेशा हिंदू वादी व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विरोध किया है। एकता के लिए जो यथार्थ में है ,ही नहीं के नाम पर बहुमत की संस्कृति को अन्य पर थोप कर क्या एक राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं? क्या ऐसा राष्ट्र सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करेगा या 1 वर्ग के हितों का साधन बनकर रह जाएगा ? अंबेडकर द्वारा जातिवाद व ब्राह्मणवाद दोनों को राष्ट्र विरोधी कहां पर हिंदू राष्ट्र में उन्हें स्थापित किया जा रहा है। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हिंदू राष्ट्र के निर्माण की बात की यह भारतीय सभ्यता है। गेलनर ने कहा " कई बार राष्ट्रवाद ने पहले से मौजूद संस्कृतियों को राष्ट्रो में बदल दिया हैं"। हिंदू राष्ट्र के संबंध में यह बिल्कुल ठीक बैठता है यह बहुमत धर्म व उच्च जाति के संस्कृति को अन्य ऊपर थोप रही है राष्ट्रवाद के नाम पर भारतीय संविधान जो धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रवाद की बात करता है जिसमें सभी को सम्मान और हिंदू राष्ट्रवादी इसके विरोध में है।

जिस तरह बाहरी हमला देश की सीमा के लिए खतरा है उसी प्रकार जाति, संप्रदायिकता व शोषणकारी घटनाएं राष्ट्र के लिए आंतरिक खतरा है यह खतरा स्वतंत्र अभिव्यक्ति, अन्याय या सरकार के विरुद्ध प्रश्न उत्पन्न करने से नहीं होता परंतु सता बल अपने हितों के अनुरूप राष्ट्रवाद व धर्मनिरपेक्षता के अर्थ को परिभाषित कर रहे हैं। उदार व पथनिरपेक्ष विचारों को धार्मिक राष्ट्रवाद द्वारा चुनौती दी जा रही है।

हर विचार व अवधारणा का एक संदर्भ तथा कुछ सीमाएं भी होती हैं अंबेडकर के सिद्धांत में भी कुछ वाद–विवाद देखने को मिलते हैं जैसे क्या आत्म निर्णय के आधार पर पाकिस्तान की मांग का समर्थन करना ठीक है शायद यह भी कुछ की मांग हो सकती है सभी संप्रदाय की नहीं धर्म के नाम पर राष्ट्र की मांग को स्वीकार करना ठीक है ? अंबेडकर ने जाति व धर्म पर दोहरा दृष्टिकोण अपनाया है जातीय असमानता का विरोध करते हैं पर धार्मिक असमानता का नहीं हर राष्ट्रीयता को आत्म निर्णय के नाम पर यदि स्वीकृति दी गई तो क्या भारत विभिन्न राष्ट्रों में विभाजित नहीं हो जाएगा? परंतु इसके बावजूद अंबेडकर के राष्ट्रवादी विचार महत्वपूर्ण है तथा इन्हें समकालीन संदर्भ में अपना जा सकता है तथा राष्ट्र निर्माण संबंधी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

निष्कर्ष– समकालीन राष्ट्रीय व राष्ट्रीय विरोधी के प्रवचन में अंबेडकर के विचार बहुत प्रसांगिक है क्योंकि उनका सिद्धांत आलोचनात्मक है ,सिद्धांत व व्यवहार के पुनर्निर्माण की बात करता है ।उनका राष्ट्रवाद केवल बाहरी स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि आंतरिक रुप में राष्ट्र के निर्माण पर आधारित है जो एक यथार्थ राष्ट्र है जबकि वर्तमान में हम इस राष्ट्र से एक हिंदू राष्ट्र की ओर जा रहे हैं। यह सच है कि अंबेडकर ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कभी भी उत्सुकता से भाग नहीं लिया बल्कि उन्होंने मुख्य धारा के राष्ट्रीय आंदोलन का विरोध किया परंतु उनके इस तरह के दृष्टिकोण ने अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक व्यवस्था के व्यापक आधार के निर्माण ने योगदान दिया जिस नीव पर वर्तमान भारतीय राष्ट्र राज्य खड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ambedkar B-R-2019- Dr-Babasaheb Ambedkar Composing and Talks Vol-7 Transformation and Counter Insurgency

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

Buddha and Karl Mar Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P& 196.

2. Ambedkar]B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar Composing and Discourses Vol-15 Pakistan or parcel of India Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P& 21.

3 Ambedkar B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar % Composing and Talks Vol-3 Dr-B-R Ambedkar Within the Bombay Assembly Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P& 218.

4. Ibid -P& 111

5. G- Aloysius - ¼2017½ - Ambedkar^s Political Patriotism - Rawat Distribution % Modern Delhi -P& 135.

6. Gail Omvedt- 2004- Ambedkar Towards on Illuminated India - Penguin Book Ltd Modern Delhi- P 135.

7. Ambedkar B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar Composing and Discourses Vol-6 Reasoning of Hinduism Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P& 33.

8. Ambedkar B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar Composing and Discourses Vol-1 Caste In India And Demolition of caste Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P& 35&36.

9. Ambedkar B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar % Composing and Talks Vol-15 Pakistan or segment of India Delhi Indian Government Service of Social equity and Empowerment- P&185& 86.

10. Ambedkar B-R-2019- Dr. Babasaheb Ambedkar Composing and Addresses Vol-2 Sacred Change And Financial Issues Delhi In dian Government% Service of Social equity and Empowerment- P& 265.

11. Mishra Kalraj- Ambedkar's Vision of Patriotism Had No room for Parochialism - The Indian Epress- 13 April 2021- https//indianepress-com/article/supposition/columns/babasaheb&bhimrao&ambedkar&patriotism&constituent&get together&7270829 /lite.

12. Sampath G- Who is an hostile to & National \ - The Hindu - 17 Feb 2016- https//www-thehindu-com/supposition/op&ed/Who&is&an&hostile to&national/article14082785-ece

13. Purohit Anil Pradyumna - When the Indian Structure characterized ÞAgainst & National The Wire- 13 Feb 2018. https%//thewire-in/law/indian&structure&characterized&hostile to&national&returning to&overlooked&article&31d

14. Jaffrelot Christophe- Ambedkar Against Patriotism - The Indian Epress - 14 April 2016. https%//carnegieen dowment-org/2016/04/14/ambedkar&against&patriotism&pub&63331

15. G. Aloysius - 2017 - Ambedkar^s Political Patriotism - Rawat Distribution % Modern Delhi.

16. Geller Sincere - 1983 - Nation And Patriotism- Oxford - Basil Blackwell.

17. Satyavratalvan- 2003- Hindu Patriotism Challenges and Openings For Christian Mission - Change- Vol 20 4- p196.

18. Panikkar K-V- 2016 - Patriotism and It's Detractors- Social Researchers - Vol 44 9- P 3&4.

*****